आमलकी एकादशी व्रत कथा

पूजा विधि और आरती

आमलकी एकादशी का महत्व : फाल्गुन शुक्ल पक्ष की एकादशी को आमलकी एकादशी के नाम से जाना जाता है। इस एकादशी में आंवले के पेड़ के नीचे भगवान विष्णु की पूजा की जाती है। मान्यता है कि इस व्रत को करने से • सभी प्रकार के पाप नष्ट हो जाते हैं और मोक्ष की प्राप्ति होती है। कहा जाता है कि इस दिन व्रत रखने से एक हजार गौदान के फल के बराबर पुण्य की प्राप्ति होती है।

भगवान विष्णु की पूजा विधि : इस दिन सुबह जल्दी उठकर स्नान कर लें। इसके बाद घर के मंदिर में विष्णु जी की प्रतिमा के सामने हाथ में तिल, कुश, मुद्रा और जल लेकर व्रत करने का संकल्प लें। संकल्प लेते हुए कहें "मैं भगवान विष्णु की प्रसन्नता एवं मोक्ष की कामना से आमलकी एकादशी का व्रत रखता/रखती हूं. मेरा यह व्रत सफलतापूर्वक पूरा हो इसके लिए श्री हरि मुझे अपनी शरण में रखें."। अब विधि विधान के साथ श्री हरि की पूजा करें। पूजा के लिए विष्णु जी की प्रतिमा को स्नान कराएं। फिर उसे साफ कपड़े से पोंछकर वस्त्र पहनाएं। फिर विष्णु जी को फूल, तुलसी दल और कुछ फल चढ़ाएं। फिर आमलकी एकादशी की कथा पड़े और अंत में विष्णु जी की आरती उतारकर भोग लगाएं।

आंवले के पेड़ की पूजा : इस तरह से भगवान विष्णु की पूजा करने के बाद आंवले के पेड़ की पूजा करें। इसके लिए वृक्ष के चारों तरफ की भूमि साफ कर लें। पेड़ की जड़ में वेदी बनाकर कलश स्थापित करें। कलश में पंच रत्न रखें और दीप जलाकर रखें। फिर कलश के ऊपर परशुराम जी की मूर्ति स्थापित करें और विधिवत पूजा करें। शाम के समय फिर से विष्णु भगवान का पूजन करें। फिर रात भर भजन कीर्तन करने हुए बिताएं। अगले दिन यानी द्वादशी को ब्राह्मण को भोजन कराएं। उन्हें यथा शक्ति दान-दक्षिणा देकर विदा करें। इसके बाद खुद भोजन करें।

आमलकी एकादशी की कथा : पौराणिक कथा के अनुसार एक बार वैदिश नाम का नगर था, जिसमें ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र चारों वर्ण आनंद सहित रहते थे. उस नगर में सदैव वेद ध्वनि गूंजा करती थी तथा पापी, दुराचारी तथा नास्तिक उस नगर में कोई नहीं था. उस नगर में चेतरथ नाम का चन्द्रवंशी राजा राज्य करता था. वह अत्यंत विद्वान तथा धर्मी था. उस नगर में कोई भी व्यक्ति दरिद्र व कंजूस नहीं था. सभी नगरवासी विष्णु भक्त थे और आबाल-वृद्ध स्त्री-पुरुष एकादशी का व्रत किया करते थे. एक बार फाल्गुन मास के शुक्ल पक्ष की आमलकी एकादशी आई. उस दिन राजा, प्रजा तथा बाल-वृद्ध सबने हर्षपूर्वक व्रत किया. राजा अपनी प्रजा के साथ मंदिर में जाकर पूर्ण कुंभ स्थापित करके धूप, दीप, नैवेद्य, पंचरत्न

आदि से आंवले का पूजन करने लगे और इस प्रकार स्तुति करने लगे. इसके बाद सबने उस मंदिर में रात्रि जागरण किया.

रात के समय वहां एक बहेलिया आया, जो अत्यंत पापी और दुराचारी था. वह अपने कुटुम्ब का पालन जीव-हत्या करके किया करता था. भूख और प्यास से अत्यंत व्याकुल वह बहेलिया इस जागरण को देखने के लिए मंदिर के एक कोने में बैठ गया और विष्णु भगवान तथा एकादशी माहात्म्य की कथा सुनने लगा. इस प्रकार अन्य मनुष्यों की भांति उसने भी सारी रात जागकर बिता दी प्रातःकाल होते ही सब लोग अपने घर चले गए तो बहेलिया भी अपने घर चला गया. घर जाकर उसने भोजन किया कुछ समय बीतने के पश्चात उस बहेलिए की मृत्यु हो गई, मगर उस आमलकी एकादशी के व्रत तथा जागरण से उसने राजा विदूरथ के घर जन्म लिया और उसका नाम वसुरथ रखा गया युवा होने पर वह चतुरंगिनी सेना सहित तथा धन धान्य से युक्त होकर 10 हजार ग्रामों का पालन करने लगा. वह अत्यंत धार्मिक, सत्यवादी, कर्मवीर और विष्णु भक्त था वहएक दिन राजा शिकार खेलने के लिए गया. दैवयोग से वह मार्ग भूल गया और दिशा ज्ञान न रहने के कारण उसी वन में एक वृक्ष के नीचे सो गया. थोड़ी देर बाद वहां कुछ लोग आ गए और राजा को अकेला देखकर 'मारो, मारो...' शब्द करते हुए राजा की ओर दौड़े. वे कहने लगे कि इसी दुष्ट राजा ने हमारे माता, पिता, पुत्र, पौत्र आदि अनेक संबंधियों को मारा है तथा देश से निकाल दिया है अतः इसको अवश्य मारना चाहिए.

ऐसा कहकर वे उस राजा को मारने दौड़े और अनेक प्रकार के अस्त्र-शस्त्र उसके ऊपर फेंके वे सब अस्त्र-शस्त्र राजा के शरीर पर गिरते ही नष्ट हो जाते और उनका वार पुष्प के समान प्रतीत होता. अब उन लोगों के अस्त्र-शस्त्र उलटा उन्हीं पर प्रहार करने लगे जिससे वे मूर्छित होकर गिरने लगे. उसी समय राजा के शरीर से एक दिव्य स्त्री उत्पन्न हुई. वह स्त्री अत्यंत

सुंदर होते हुए भी उसकी भृकुटी टेढ़ी थी, उसकी आंखों से लाल-लाल अग्नि निकल रही थी जिससे वह दूसरे काल के समान प्रतीत होती थी.

वह स्त्री उन लोगों को मारने दौड़ी और थोड़ी ही देर में उसने सबको काल का ग्रास बना दिया. जब राजा सोकर उठा तो उसने उन लोगोंको मरा हुआ देखकर कहा कि इन शत्रुओं को किसने मारा है? इस वन में मेरा कौन हितेषी रहता है? वह ऐसा विचार कर ही रहा था कि आकाशवाणी हुई, "हे राजा इस संसार में विष्णु भगवान के अतिरिक्त कौन तेरी सहायता कर सकता है." इस आकाशवाणी को सुनकर राजा अपने राज्य में आ गया और सुखपूर्वक राज्य करने लगा.

विष्णु जी की आरती

ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी! जय जगदीश हरे।
भक्त जनों के संकट, क्षण में दूर करे ॥
ॐ जय जगदीश हरे।
जो ध्यावे फल पावे, दुःख विनसे मन का।
स्वामी दुःख विनसे मन का।
सुख सम्पत्ति घर आवे, कष्ट मिटे तन का॥
ॐ जय जगदीश हरे।
मात-पिता तुम मेरे, शरण गहूँ मैं किसकी।
स्वामी शरण गहूँ मैं किसकी।
तुम बिन और न दूजा, आस करूँ जिसकी ॥
ॐ जय जगदीश हरे।

तुम पूरण परमात्मा, तुम अन्तर्यामी।
स्वामी तुम अन्तर्यामी।
पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी ॥
ॐ जय जगदीश हरे।

तुम करुणा के सागर, तुम पालन-कर्ता।
स्वामी तुम पालन-कर्ता।
में मूरख खल कामी, कृपा करो भर्ता ॥
ॐ जय जगदीश हरे।

तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपति।
स्वामी सबके प्राणपति।
किस विधि मिलूँ दयामय, तुमको मैं कुमति॥
ॐ जय जगदीश हरे।

दीनबन्धु दुखहर्ता, तुम ठाकुर मेरे।
स्वामी तुम ठाकुर मेरे।
अपने हाथ उठाओ, द्वार पड़ा तेरे ॥
ॐ जय जगदीश हरे।

विषय-विकार मिटाओ, पाप हरो देवा।
स्वमी पाप हरो देवा।
श्रद्धा-भक्ति बढ़ाओ, सन्तन की सेवा ॥
ॐ जय जगदीश हरे।

श्री जगदीशजी की आरती, जो कोई नर गावे।
स्वामी जो कोई नर गावे।
कहत शिवानन्द स्वामी, सुख संपत्ति पावे ॥
ॐ जय जगदीश हरे।

Panot Book